राधा राधा राधा राधा

राधा राधा राधा राधा

तर्ज : रात श्याम मेरे सपने आयो ब्रज भूमि में पांव धरत ही, तन मन बोले-राधा राधा राधा राधा ।।

गोवर्धन गिरि, ब्रजरज, यमुना,
कण कण बोले-राधा राधा०

पशु पक्षी तरू फूल लताएं,
कुंज कुंज बोले-राधा राधा०

छाछ दूध दहीं माखन मटकी,
बंसी बोले-राधा राधा०

निगमागम सुर सन्त भगत मुनि,
जन गण बोले- राधा राधा०

मधुर मधुर रस चाख '
मधुप हरि' रसना बोले - राधा राधा०

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण 'मधुप' (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/34888/title/radha-radha-radha-raha

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |